या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

दुर्गा और महाविद्या रूप में बरसती मां की कृपा

आदिशक्ति, जिनके अलग- अलग नाम हैं पर स्वरूप एक ही है। चराचर जगत को शक्ति देना जिनका उद्देश्य है मां को आद्या शक्ति और परा शक्ति के नाम से भी जाना जाता है, जो निराकार ऊर्जा हैं। उनका कोई रूप नहीं है, वे समस्त कारणों की कारण हैं। समस्त तत्वों में विद्यमान हैं। इन शक्तियों की 10 महाविद्या के रूप में भी पूजन करते हैं जो संसार में चक्र को गतिमान बनाने और देवीय तत्वों को जीव मात्र से जोड़ने का विधान है और उन के समस्त कलमश को समाप्त कर पूर्ण मनोयोग जागृत करती हैं। समस्त कमनाओं की पूर्ति कर मोक्ष प्रदान करती हैं। इन महाविद्याओं को धारण करने के लिए भगवान शिव के भी 10 रुद्र अवतार हुये हैं क्योंकि शक्ति को धारण करने वाले शिव ही हैं। इस बार शारदीय नवरात्र 10 दिनों के होंगे और भगवती की कृपा सभी पर बरसेगी। हम आपको मां के नौ दुर्गा स्वरूपों के साथ ही 10 महाविद्या स्वरूप के भी बारे में बता रहे हैं।

निराकार का आकार में प्रविष्ट

आदिशक्ति ब्रह्मांड की रचना, पालन और संहार के लिए आकार धारण करती हैं। ब्रह्मत्व, शिवत्व, विष्णुत्व का उदगम बनतीं हैं। साथ ही सृजन, विस्तार और संहार के गुण को सृष्टि के कण- कण में विराजमान कराके जीव मात्र के उद्धार के लिए पृथ्वी पर अपने अलग- अलग स्वरूपों में विद्यमान होती हैं। इन स्वरूपों का पूजन हम नवरात्र महापर्व में 9 दिनों में करते हैं। वास्तव में आदिशक्ति की तीन मुख्य धाराएं हैं। महा काली, महा गौरी, महा सरस्वती हैं तमो गुण व्यापिनी, रजोगुनी गुण व्यापिनी और सतो गुण व्यापिनी। तीन- तीन दिन महा काली, महा गौरी और महा सरस्वती के रजो गुणी, तमो गुणी और सतो गुणी स्वरूपों का पूजन होता है।

गज पर सवार होकर आएंगी मां

- 22 सितम्बर 2025 को सूर्य उदय पर अश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि प्राप्त होने के कारण नवरात्र महापर्व का आरम्भ होगा। मां गज पर सवार होकर आ रही हैं, जो अत्यंत शुभ और सुख-समृद्धि, सौभाग्य की वृद्धि का संकेत है। इस बार तिथि वृद्धि के कारण नवरात्र में भक्तों को नौ नहीं पूरे 10 दिन आदिशक्ति के पूजन का सौभाग्य मिलेगा, और 11 वें दिन 2 अक्टूबर को दशहरा पर्व मनाया जायेगा। महा अष्टमी का पूजन 30 सितम्बर और नवमी का पूजन 1 अक्टूबर को किया जायेगा।

दस महाविद्या स्वरूप

- **माँ काली :** देवी का पहला महाविद्या स्वरूप काली है, जो समय और परिवर्तन की देवी हैं। माता का स्वरूप हाथ में त्रिशूल और तलवार है।
- **तारा देवी :** महाविद्या का दूसरा स्वरूप तारा है, जो ज्ञान और मोक्ष की देवी हैं। जो समस्त बधाओं को हर के इस जग से तरने वाली कहलाती हैं।
- **त्रिपुरसुंदरी :** देवी का तीसरा स्वरूप त्रिपुरसुंदरी है, जो सौंदर्य और आकर्षण की देवी हैं। मां चार भुजा और 3 नेत्र के सुंदर स्वरूप में विराजमान हैं।
- **भुवनेश्वरी :** देवी का चौथा महाविद्या स्वरूप भुवनेश्वरी है, जो सृष्टि और पालन की देवी हैं। कमल पर विराजमान देवी का पूजन किया जाता है।
- **छिन्नमस्ता :** पांचवां स्वरूप छिन्नमस्ता है, जो आत्म-बलिदान की देवी हैं। इनका स्वरूप कटा हुआ सिर और बहती हुई रक्त की तीन धाराएं से सुशोभित रहता है।
- **त्रिपुरभैरवी :** देवी का छठा स्वरूप त्रिपुरभैरवी है, जो ज्ञान और मोक्ष की देवी हैं।
- **धूमावती :** देवी का सातवां महाविद्या स्वरूप धूमावती है, जो विध्वंस और परिवर्तन की देवी हैं। मां मानसिक शक्ति प्रदान करती हैं।
- **बगलामुखी :** देवी का आठवां स्वरूप बगलामुखी है, जो शत्रुओं को नष्ट करने वाली देवी हैं। मां पीतवर्ण में विराजमान हैं।
- **मातंगी :** देवी का नौवां स्वरूप मातंगी है, जो संगीत और कला की देवी हैं।
- **कमला :** देवी का दसवां महाविद्या स्वरूप कमला है, जो धन और समृद्धि की देवी हैं।

घटस्थापना

घटस्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 06 :09 से सुबह 08 :06 तक रहेगा। इसके अलावा अभिजित मुहूर्त सुबह 11 :49 से दोपहर 12 :38 रहेगा।

ज्योतिषाचार्य
स्वाति सक्सेना
संस्थापक अंतरंग फाउंडेशन

शैलपुत्री
देवी का पहला स्वरूप शैलपुत्री है, जो हिमालय की पुत्री हैं।

ब्रह्मचारिणी
देवी का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी है, जो ज्ञान और तपस्या की देवी हैं।

चंद्रघंटा
देवी का तीसरा स्वरूप चंद्रघंटा है, जो शांति और सौंदर्य की देवी हैं।

कूष्मांडा
देवी का चौथा स्वरूप कूष्मांडा है, जो सृष्टि की देवी हैं।

स्कंदमाता
देवी का पांचवां स्वरूप स्कंदमाता है, जो स्कंद की माता हैं।

कात्यायनी
देवी का छठा स्वरूप कात्यायनी है, जो कात्यायन ऋषि की पुत्री हैं।

कालरात्रि
देवी का सातवां स्वरूप कालरात्रि है, जो अंधकार और भय को दूर करने वाली देवी हैं।

महागौरी
देवी का आठवां स्वरूप महागौरी है, जो शुद्धता और पवित्रता की देवी हैं।

सिद्धिदात्री
देवी का नौवां स्वरूप सिद्धिदात्री है, जो सिद्धि और ज्ञान की देवी हैं।

बोध कथा

सद्गुरु

एक गांव में एक किसान रहता था। किसान अपनी पत्नी और बच्चों के साथ बहुत प्रसन्न था। किसान के घर में एक गाय थी, जिसे किसान और उसकी पत्नी बहुत प्यार से रखते थे। किसान प्रातः काल खेत पर जाने के समय गाय को भी ले जाता था जो कि पास ही जंगल में चरती रहती थी। शाम को गाय अपने मालिक किसान के साथ वापस आ जाती थी। एक बार गाय घने जंगल में चली गई। शाम ढलने के करीब थी। गाय ने देखा कि एक बाघ उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। गाय घबराकर दौड़ पड़ी और एक तालाब में चली गई। बाघ भी तालाब में घुस गया। पानी तो कम था पर कीचड़ बहुत था। गाय कीचड़ में धंसने लगी, बाघ के पैर भी कीचड़ में धंसने लगे। गाय और बाघ के बीच दूरी अधिक नहीं थी परन्तु ना तो बाघ आगे बढ़ पा रहा था और ना गाय ही हिल पा रही थी। दोनों लगभग गले तक उस कीचड़ में फंस गये। बाघ का भोजन समक्ष होने के बावजूद बाघ उसे पकड़ने में असमर्थ था। थोड़ी देर बाद गाय ने बाघ से पूछा- तुम्हारा कोई गुरु या स्वामी है। बाघ ने गुर्राते हुये उत्तर दिया स्वामी कैसा स्वामी! मैं तो स्वयं इस जंगल का राजा हूं। गाय ने कहा तुम्हारी इस शक्ति का यहां क्या उपयोग है- तुम अपनी शक्ति के बल पर इस कीचड़ से बाहर नहीं निकल सकते। अब बाघ ने गाय से कहा तुम भी मेरी जैसी स्थिति में हो। तुम भी फंसी हो और मरने के करीब हो। गाय ने बाघ को उत्तर दिया- ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। शाम को मेरा मालिक किसान घर वापस जायेगा और मुझे नहीं पायेगा तो वह किसान जो कि मेरा मालिक है निश्चित ही ढूंढता हुआ यहां आयेगा और मुझे यहां से निकाल कर ले जायेगा और वही हुआ, थोड़ी देर बाद किसान गाय को ढूंढता हुआ तालाब के पास आया और गाय को कीचड़ से निकाल कर अपने घर ले गया। गाय और किसान दोनों एक दूसरे के प्रति कृतज्ञ थे, वो चाह कर भी बाघ को कीचड़ से नहीं निकाल सकते थे क्योंकि बाघ दोनों के जीवन के लिये खतरा था। इस कथा से हमें यह ज्ञान मिलता है कि बाघ अहंकार का प्रतीक है, गाय का मालिक किसान सद्गुरु का प्रतीक है और कीचड़ यह संसार है। इस संसार रूपी कीचड़ से निकलने के लिये हमें अहंकार की नहीं किसी न किसी रूप में एक मित्र अथवा किसी गुरु की आवश्यकता होती है जो हमें इस संसार रूपी संघर्ष में ज्ञान दे कर उससे बाहर निकाल सके।

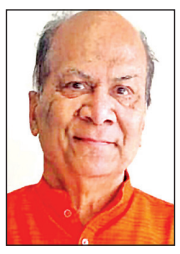

लेखक: अशोक सूरी, आध्यात्मिक लेखक

चितई गोल्ज्यू देवता : यहां अर्जी लगाने से मिलता है न्याय

देवभूमि उत्तराखंड में वैसे तो कई देवस्थल हैं, लेकिन उनमें से एक है कुमाऊं क्षेत्र में अल्मोड़ा के पास स्थित गोल्ज्यू देवता मंदिर। मान्यता है कि मंदिर में अर्जी लगने के बाद गोल्ज्यू देवता अपने भक्त की समस्या का समाधान करते हैं। कुमाऊं के लोग गोल्ज्यू को अपना इष्ट देवता मानते हैं। अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से करीब आठ किलोमीटर दूर अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ हाइवे पर चितई नामक स्थान पर गोल्ज्यू देवता का मंदिर है। यहां विराजमान देवता को न्याय के देवता के रूप में पूजा जाता है। मंदिर में लगे स्टांप पेपर पर लिखी हजारों अर्जियां इस बात की गवाह हैं कि मंदिर में लोग अपनी समस्या के समाधान और न्याय की गुहार लगाने आते हैं। भक्तों की मान्यता अनुसार जिसे कहीं से भी न्याय न मिले तो उसे गोल्ज्यू देवता न्याय देते हैं। यहीं कारण है कि मंदिर में हर रोज सैकड़ों अर्जियां लगती हैं। लोग स्टांप पेपर पर भी अपनी शिकायत और समस्या लिखकर देते हैं। मंदिर के पुजारी इस अर्जी को गोल्ज्यू देवता के चरणों में रखकर श्रद्धालु से इसे मंदिर परिसर में टंगवाते हैं।

- कुमाऊं के लोग न्याय के देवता गोल्ज्यू को मानते हैं अपना इष्ट देवता
- 12वीं शताब्दी में हुआ था अल्मोड़ा में चितई में गोल्ज्यू देवता मंदिर का निर्माण
- मनोकामना पूरी होने पर लोग चढ़ाते हैं घंटियां

जन श्रुतियों के अनुसार यह है कहानी

- मंदिर के पुजारी पंडित संतोष पंत बताते हैं कि एक कथा के अनुसार, गोल्ज्यू देवता को ग्वाल देवता के नाम से भी जाना जाता है। यह कथा राजा और रानी से जुड़ी है, जहां सौतेली रानियों ने नवजात शिशु को नदी में फेंक दिया था, जिन्हें एक मछुआरे ने बचाया था। बाद में गोलू देवता की पहचान निष्पक्षता से न्याय प्रदान करने वाले न्यायप्रिय राजा के रूप में बनी और उन्हें ग्वाल देवता या गोल्ज्यू देवता के रूप में जाना जाने लगा। बताया जाता है कि गोल्ज्यू देवता चम्पावत के अलावा अल्मोड़ा के चितई में भी अपना दरबार लगाते थे। जहां वह लोगों का न्याय करते थे, तब से ही कुमाऊं में उन्हें न्याय का देवता माना जाने लगा।

12 वीं शताब्दी में हुआ था मंदिर का निर्माण

- मान्यता के अनुसार, चंद वंश के एक सेनापति ने 12 वीं शताब्दी में मंदिर का निर्माण करवाया था। न्याय के देव गोलू देवता को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। उनमें से सबसे प्रसिद्ध है कि यहां पर कत्यूरी वंश के शासकों का 7वीं से 12वीं सदी तक राज था। गोलू महाराज कत्यूरी वंश के राजकुमार या सेनानायक थे।

मंदिर में हजारों घंटे घंटियों का संग्रह

- चितई मंदिर में हजारों घंटे-घंटियों का संग्रह है, जिन लोगों की मनोकामना पूरी हो जाती है वे यहां घंटी चढ़ाते हैं। मंदिर परिसर में हजारों की संख्या में छोटी-बड़ी घंटियां टंगी हैं। इसके अलावा वर्षों से मंदिर परिसर के दो कमरों में भी हजारों की संख्या में वह घंटियां रखी हैं जो तेज हवाओं या फिर किन्हीं अन्य कारणों से गिर गई थीं।

कैसे पहुंचें मंदिर तक

- गोलू देवता चितई मंदिर अल्मोड़ा से करीब आठ किमी दूर पिथौरागढ़ रोड पर स्थित है। यह सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है और टैक्सी, बस आदि साझा करके आसानी से पहुंचा जा सकता है। निकटतम रेल संपर्क काठगोदाम रेलवे स्टेशन करीब 94 किमी है। पंतनगर हवाई अड्डा से 124 किमी अल्मोड़ा पहुंचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा हैं।

प्रस्तुति
कमलेश कनवाल
अल्मोड़ा

व्रत एवं त्योहार

भगवान विश्वकर्मा का पूजन कल

भगवान विश्वकर्मा ने सोने की लंका और भगवान श्रीकृष्ण के लिए द्वारका नगरी का निर्माण किया था। भगवान विश्वकर्मा भगवान ब्रह्मा के सातवें पुत्र हैं, जिन्होंने ब्रह्मांड को बनाने में ब्रह्मा जी की मदद की थी। भगवान विश्वकर्मा जी दुनिया के पहले वास्तुकार व शिल्पकार है। यह त्योहार मुख्य रूप से कारीगरों, शिल्पकारों, इंजीनियरों और औद्योगिक मजदूरों द्वारा मनाया जाता है। इस दिन यह लोग अपने औजारों और मशीनों की पूजा करते हैं। यह त्योहार उस दिन मनाया जाता है जब सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करता है। पंचांग के अनुसार, सूर्य 17 सितंबर को देर रात 01 बजकर 55 मिनट पर कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। इसी दिन विश्वकर्मा पूजा का आयोजन होगा। इस दिन राहुकाल दोपहर 12 बजकर 15 मिनट से दोपहर 01 बजकर 47 मिनट तक रहेगा। राहुकाल के समय पूजा-पाठ व शुभ कार्यों की मनाही होती है। इसके बाद ही पूजन होगा। कन्या संक्रांति के दिन ही भगवान विश्वकर्मा का अवतरण हुआ था। यह दिन भगवान विश्वकर्मा के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन लोग भगवान विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना करते हैं और अपने काम में सफलता व समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। विश्वकर्मा पूजा करने से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

पितृ विसर्जनी अमावस्या 21 सितंबर को

पितृ विसर्जनी अमावस्या को पितृ मोक्ष अमावस्या भी कहते हैं। पितृ पक्ष का अंतिम दिन होने के नाते इस दिन उन पितरों के लिए श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान किया जाता है, जिनकी मृत्यु तिथि अज्ञात हो। इस दिन दान करने से पितरों को शांति मिलती है। माना जाता है कि यह पितृ दोष से मुक्ति दिलाने और जीवन में सुख-शांति लाने का आखिरी मौका होता है। इस साल सर्व पितृ अमावस्या 21 सितंबर को पड़ रही है। इस दिन किसी नदी या सरोवर में स्नान के बाद पूर्वजों का पूजन, श्राद्ध और तर्पण कर उन्हें विदा किया जाता है। साथ ही श्रद्धा के अनुसार दान, पशु पक्षियों को चारा देना चाहिए।

लेखक
पंडित: सोमदत्त अग्निहोत्री